दूध का मूल्य निर्धारक

कृषि कुंभ (नवंबर 2023),
खण्ड 03 अंक 06, पृष्ठ संख्या 67–69

दूध का मूल्य निर्धारक

राजकुमार सोनी[1], राजेंद्र कुमार सोनी[2], एवं मीठा लाल मीना[3]
[1,2]एम.एससी. स्कॉलर एवं [3]रिसर्च स्कॉलर
पशुपालन एवं डेयरी विज्ञान विभाग
राजा बलवंत सिंह कॉलेज, बिचपुरी , आगरा–283105 (यू.पी.), भारत।
Email Id: 25rajkumar1999@gmail.com

परिचय

भारत दुनिया का शीर्ष दूध उत्पादक देश है, जो दुनिया का 22 प्रतिशत दूध पैदा करता है, इसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, पाकिस्तान और ब्राजील आते हैं। चारे की बढ़ती लागत, दूध उत्पादों की मांग में वृद्धि और गाय की संक्रामक बीमारी के कारण, दुनिया की डेयरी महाशक्ति भारत में वर्तमान में दूध की कीमतों में वृद्धि देखी जा रही है, जिसके कम होने की उम्मीद नहीं है। भारत में, दूध हर घर की दैनिक खरीदारी है। प्रतिदिन प्रति व्यक्ति औसतन 440 ग्राम की खपत होती है। हर भारतीय के दिन की शुरुआत दूध से होती है। लोग आमतौर पर सुबह दूध, चाय और कॉफी का सेवन करते हैं और दूध कई भारतीय व्यंजनों में एक प्रमुख घटक है। पनीर, घी और दही अन्य दूध आधारित उत्पाद हैं जो भारतीय व्यंजनों में आम हैं।

वर्तमान परिदृश्य

उपभोक्ता और नीति निर्माता दोनों 2023 में दूध की कीमतों में तेज वृद्धि से चिंतित हैं। अमूल ने फरवरी 2023 में कीमतों में 3 रुपये प्रति लीटर तक की बढ़ोतरी की, जो 2021 के बाद से कंपनी की छठी वृद्धि है। फुल क्रीम दूध की कीमत में वृद्धि हुई है फरवरी 2023 तक 66 सेंट प्रति लीटर, जबकि टोंड दूध अब 54 सेंट प्रति लीटर है।

भारत में दूध की औसत खुदरा कीमत एक साल पहले की तुलना में 12 प्रतिशत बढ़कर 57.15 रुपये प्रति लीटर हो गई है। मुद्रास्फीति (सीपीआई–संयुक्त) पर नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, मार्च 2023 में दूध और अन्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति दर 9.3 प्रतिशत थी, जो खुदरा मुद्रास्फीति को भी बढ़ा रही है। मौजूदा परिस्थितियों के कारण सरकार को मक्खन और स्किम्ड मिल्क पाउडर (एसएमपी) सहित डेयरी सामान आयात करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। भारत में दूध और दूध उत्पादों के उत्पादन, खपत, मूल्य निर्धारण और व्यापार को प्रभावित करने वाले कारकों की जांच करना महत्वपूर्ण है क्योंकि दूध देश की पोषण प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक है।

दूध उत्पादन

भारत की आजादी के बाद से दूध उत्पादन में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। 1970 के दशक में ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम के नेतृत्व में वर्षों के लगातार राष्ट्रीय प्रयासों के माध्यम से,

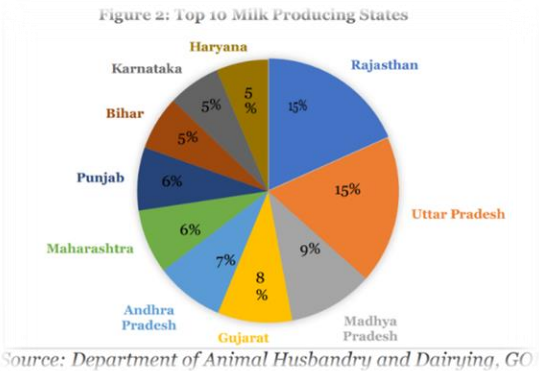

भारत ने दूध उत्पादन और खपत में आत्मनिर्भरता हासिल की है। आजादी के समय दुग्ध उत्पादन बमुश्किल 17 मीट्रिक टन से बढ़कर अब 222 मीट्रिक टन (अनंतिम आंकड़े) हो गया है, जिसमें 4.9 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर है। लेकिन 2021–2022 में 5.3 प्रतिशत से 2022–2023 में केवल 0.4 प्रतिशत तक, दूध उत्पादन वृद्धि में नाटकीय रूप से कमी आई है। दूध उत्पादन स्थिर रहने के कारण दूध की कीमत में वृद्धि हुई है।

दूध का सेवन

प्रति व्यक्ति दूध की खपत और लोगों या घरों की संख्या कुल दूध खपत के कारक हैं। उपभोक्ता खर्च में वृद्धि से पता चलता है कि दूध की मांग का प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से सीधा संबंध है।

दूध और दूध उत्पादों की कीमत

अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों ही परिवर्तन दूध की कीमत में वृद्धि में योगदान करते हैं। आपूर्ति पक्ष अल्पावधि में मूल्य वृद्धि का प्राथमिक कारण बन जाता है। चूंकि एसएमपी और मक्खन का स्थानीय स्टॉक निर्यात और आयात से तेजी से प्रभावित होता है, इसलिए वे दूध की कीमतों को प्रभावित करने में भी भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत, दीर्घकालिक कारण ज्यादातर मांग–पक्ष कारक हैं, जैसे जनसंख्या विस्तार, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, शहरीकरण, दूध से बनी वस्तुओं की बढ़ती मांग, दूध की खपत के लिए उच्च आय लोच, आदि। इसके अतिरिक्त, दूध के लिए आय लोच अक्सर होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में 1 से अधिक और निम्न आय वर्ग के लिए 2.3 से अधिक, जिसका अर्थ है कि जैसे–जैसे उपभोक्ता आय बढ़ेगी, उस पैसे का एक बड़ा हिस्सा दूध पर खर्च किया जाएगा।

दूध की कीमतों में हालिया वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

मौसम, मौसमी बदलाव और क्षेत्रीय और साथ ही वैश्विक मांग और आपूर्ति की गतिशीलता जैसे स्थानीय तत्वों के आधार पर, दूध की कीमतें स्थानों और समय अवधि के बीच नाटकीय रूप से भिन्न हो सकती हैं। उत्पादन लागत, सरकारी नियम और वैश्विक बाजार परिस्थितियों सहित कई जटिल तत्व दूध की कीमतों में वृद्धि पर प्रभाव डालते हैं। दूध की कीमतों में हालिया बढ़ोतरी के लिए अल्पकालिक आपूर्ति प्रतिबंध जिम्मेदार हैं। दूध उत्पादन वृद्धि में गिरावट के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

विनिर्माण व्यय में वृद्धि

श्रम की बढ़ती कीमतों के कारण दूध उत्पादन अब अधिक महंगा हो गया है। किसानों को अपने पशुओं के रखरखाव के लिए अधिक भुगतान करने के परिणामस्वरूप उत्पादन की कीमत भी बढ़ गई है। दिसंबर 2022, जनवरी और फरवरी 2023 के महीनों में चारे की मुद्रास्फीति 31: के शिखर पर पहुंच गई। अनाज और चावल की भूसी की बढ़ती कीमतों के परिणामस्वरूप चारे की लागत में वृद्धि हुई है, जिसका उपयोग पशु चारे में किया जाता है। दूध की कीमत चारे की लागत के अलावा परिवहन व्यय से भी काफी हद तक प्रभावित होती है। हाल ही में ईंधन और कार रखरखाव की कीमतें बढ़ी हैं, जिससे परिवहन का खर्च बढ़ गया है।

गांठदार त्वचा रोग

30 लाख से अधिक मवेशी वायरल बीमारी कैटल लम्पी स्किन बीमारी से पीड़ित हैं, और 1.69 लाख गाय और भैंस एलएसडी के परिणामस्वरूप मर गई हैं। मरने के अलावा, बीमार पशु की उत्पादकता में कमी का असर दूध उत्पादन पर भी पड़ा। भविष्य के वर्षों में, यह अनुमान लगाया गया है कि भारत सरकार के टीकाकरण कार्यक्रम और रिकवरी की उच्च दर से उत्पादकता और उत्पादन में वृद्धि होगी।

कोविड का प्रभाव

दूध और डेयरी उत्पादों की उपलब्धता और कीमत ब्ट्प्क–19 महामारी के कारण दुनिया भर में आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और लॉजिस्टिक कठिनाइयों से प्रभावित हुई है।

रेस्तरां बंद होने और सार्वजनिक समारोहों पर प्रतिबंध के कारण, महामारी से प्रेरित लॉकडाउन के दौरान दूध और दूध उत्पादों की मांग में भारी गिरावट आई। मांग में इस गिरावट से डेयरी उत्पादकों की कीमत और लाभप्रदता प्रभावित हुई। चूंकि अधिकांश डेयरी उत्पादक छोटे और सीमांत हैं, इसलिए उन पर गंभीर प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपने पशुओं को बेचना शुरू कर दिया। महामारी के बाद दूध के उत्पादन और उपलब्धता पर भी इसका असर पड़ा है.

चारे की कीमतें बढ़ीं

दूध की कीमतों में वृद्धि पशु आहार की ऊंची लागत का परिणाम है जो सबसे बड़ी मांग की अवधि के साथ मेल खाती है। चारे की लागत में वृद्धि के कारण किसानों ने अपने पशुओं को पर्याप्त भोजन देना बंद कर दिया है।

दूध उत्पादन क्षमता का आकलन

भारत की विभिन्न पशुधन जनगणना और विभिन्न राज्यों के लिए प्रकाशित माध्यमिक आंकड़ों का उपयोग करके दूध उत्पादन क्षमता का अनुमान लगाया जा सकता है। आमतौर पर द्वितीयक डेटा विभिन्न जिलों के लिए उपलब्ध है, लेकिन जहां प्रकाशित डेटा उपलब्ध नहीं है, उदाहरण के लिए कुछ गांवों के लिए या दूध उत्पादन क्षमता के संबंध में सूक्ष्म स्तर पर कुछ अनुमान आवश्यक हैं, उस उद्देश्य और डेटा के लिए एक सर्वेक्षण कार्यक्रम विकसित करना आवश्यक है। ग्राम मुख्यालय या घर–घर से एकत्र किया जाना है। आकलन प्रक्रिया उस क्षेत्र (दूध उत्पादन क्षमता के आकलन के लिए निर्धारित) में उस अवधि के लिए पशुधन जनगणना से दुधारू पशुओं की संख्या के बारे में जानकारी एकत्र करना आवश्यक है।

- एक ही समयावधि में भैंस, संकर गायों और गैर–वर्णित (स्थानीय गायों) के दैनिक औसत दूध उत्पादन पर डेटा इकट्ठा करना भी आवश्यक है।
- प्रत्येक प्रजाति की औसत दैनिक दूध उपज उस प्रजाति के दूध देने वाले जानवरों, जैसे भैंस, क्रॉसब्रेड मवेशी और स्थानीय मवेशियों की संख्या से गुणा की जाएगी।
- तीनों आँकड़ों को गुणा करने के बाद, उन्हें एक साथ जोड़ने पर हमें क्षेत्र की दैनिक दूध उत्पादन क्षमता प्राप्त होगी।
- अंत में,समान प्रकृति की जानकारी तैयार करने के लिए सर्वेक्षण अनुसूची को स्थानीय पशु चिकित्सा क्षेत्र टीम की सहायता से भरा जा सकता है।

प्रमुख चर जो दूध उत्पादन की क्षमता को प्रभावित करते हैं

- पार्लर में डेयरी पशुओं की कुल संख्या.
- कुल जानवरों में क्रॉसब्रेड, भैंस और अघोषित जानवर शामिल हैं।
- दूध देने वाले पशु की उत्पादकता और गुणवत्ता।
- वहाँ एक डेयरी विकास पहल सक्रिय है।
- समीप ही दुग्ध उत्पादक सहकारी समूह का अस्तित्व।
- पशु चिकित्सालय और चिकित्सा आपूर्ति भंडार।
- सिंचाई की क्षमता तथा चारा एवं चारे की उपलब्धता।

निष्कर्ष

दूध और दूध उत्पादों के समग्र मूल्य निर्धारण तंत्र में सुधार के लिए रणनीति और नीतिगत उपाय विकसित करने के लिए आर्थिक दक्षता के संदर्भ में महत्वपूर्ण दूध विपणन चौनलों के प्रभाव की जांच करना आवश्यक है। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि उपभोक्ताओं को उनकी क्षमता के अनुरूप कीमतों पर दूध और दूध उत्पादों की पर्याप्त आपूर्ति हो।